

तोहफ़ा मुबारक सालगिरह का

लेखनः जोएन हाइलब्रोनर

चित्रः मेरी चामर्स

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

तोहफ़ा मुबारक सालगिरह का



लेखनः जोएन हाइलब्रोनर

चित्रः मेरी चामर्स

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

तोहफ़ा मुबारक सालगिरह का

बॉबी को प्यार के साथ

और

बेशक पीटर व डेविड को भी





“माँ को कचरे वाला ट्रक
नहीं चाहिए!” पीटर ने कहा।
“तो रोलर स्केटस्?” डेवी ने पूछा।
“नहीं,” पीटर ने जवाब दिया।



“माँ को लिपस्टिक पसन्द आएगी,”
पीटर बोला।
“तो चल कर उस आदमी से पूछते हैं,”
डेवी ने कहा।



“हरे रंग की,” डेवी ने कहा।
“हमारे पास हरी लिपस्टिक तो नहीं है,”
आदमी ने जवाब दिया।
“पर तुम यह लॉलीपॉप ले सकते हो।
यह हरी है।”
“शुक्रिया,” डेवी बोला।



“क्या तुम्हें लिपस्टिक मिली?”
पीटर ने जानना चाहा।
“नहीं,” डेवी बोला।
“पर उस आदमी ने मुझे एक लॉलीपॉप दी।”
अगली दुकान में मैं पूछूंगा,”
पीटर ने कहा।



“आप यहाँ क्या बेचती हैं?”
पीटर ने सवाल किया।
“टोपियाँ,” महिला ने कहा।



“मेहरबानी से मुझे एक
औरतों वाली टोपी दिखाएं,” पीटर ने कहा।



“किस साइज़ की?” महिला ने जानना चाहा।

“क्या?” पीटर बोला।

“मतलब कितनी बड़ी?” महिला ने सवाल किया।

“जो उनके कान तक आए,” पीटर बोला।



“मुझे देखो!” डेवी चहका।

“अरे रे!” महिला बोली।

“चलो डेवी,” पीटर ने कहा।



“देखो!” डेवी बोल उठा।

“मुझे एक पंख मिला है!”

“तुम्हें मिला नहीं है,” पीटर ने सख़्ती से कहा।

“यह उस टोप से गिर पड़ा है!

अब ज़रा अच्छे बनो।”

“ठीक है, मैं अच्छा बनूंगा,” डेवी बोला।





“अरे उन सुन्दर चीज़ों को तो देखा!”
डेवी ने कहा।
“वे चीज़ें कान में पहनी जाती हैं,”
पीटर ने बताया।

“वे जिन पर तारे बने हैं?”
डेवी ने पूछा। “मुझे वे अच्छी लग रही हैं।”
“मुझे भी,” पीटर ने कहा।
“हम ये ले लेते हैं।



“इसके पाँच डॉलर हुए,”
आदमी ने कहा।
“ओहो!” पीटर बोल उठा।



“शुक्रिया,” पीटर ने बुझी आवाज़ में कहा।
“कोई बात नहीं,” आदमी बोला।
“पर मेहरबानी से अपने भाई से कहो
कि वह मेरी घड़ी से बाहर निकले।”





‘‘हो सकता है कि इनके पास कुछ ऐसा हो
जो माँ के काम आ सके,’’ पीटर ने सुझाया।
‘‘तो वह बालों का ब्रश कैसा रहेगा?’’
डेवी ने पूछा।
‘‘वह बालों का ब्रश नहीं है!’’
पीटर ने जवाब दिया।

‘‘वह रगड़ कर साफ़ करने वाला ब्रश है।’’
‘‘वह भी अच्छा तोहफ़ा है,’’ डेवी बोला।
‘‘माँ को चीज़ें रगड़ कर साफ़ करना
अच्छा लगता है,’’ पीटर ने कहा।
‘‘पर उसे मुझे भी रगड़ कर साफ़ करना पसन्द है,’’
डेवी बोला।
‘‘हम इस दुकान में नहीं जाते हैं!’’



''देखो, पीटर! एक चिड़ियाघर!'' डेवी बोल उठा।

''यह चिड़ियाघर नहीं है,'' पीटर ने बताया।

''यह पालतू जानवरों की दुकान है।''



''क्या यह समुद्र का असली शंख है?''

पीटर ने दुकानदार से पूछा।

''बिलकुल असली है,'' आदमी ने कहा।



“यह कितने का है?” पीटर ने पूछा।

“तुम इसे ऐसे ही ले सकते हो,”
आदमी ने कहा।

“ओह! शुक्रिया!” पीटर ने कहा।



“देखो पीटर! चूहे!” डेवी चहका।

“माँ को शायद एक चूहा पसन्द आए!”



“क्या यह तोहफ़ा तुम्हारी माँ के लिए है?”
आदमी ने पूछा।
“हाँ,” पीटर ने जवाब दिया।



“तो फिर पड़ोस की दुकान में कोशिश करो,”
आदमी ने सुझाया।
“डेवी!” पीटर बोला।
“क्या तुम पढ़ सकते हो कि इस पर क्या लिखा है?”



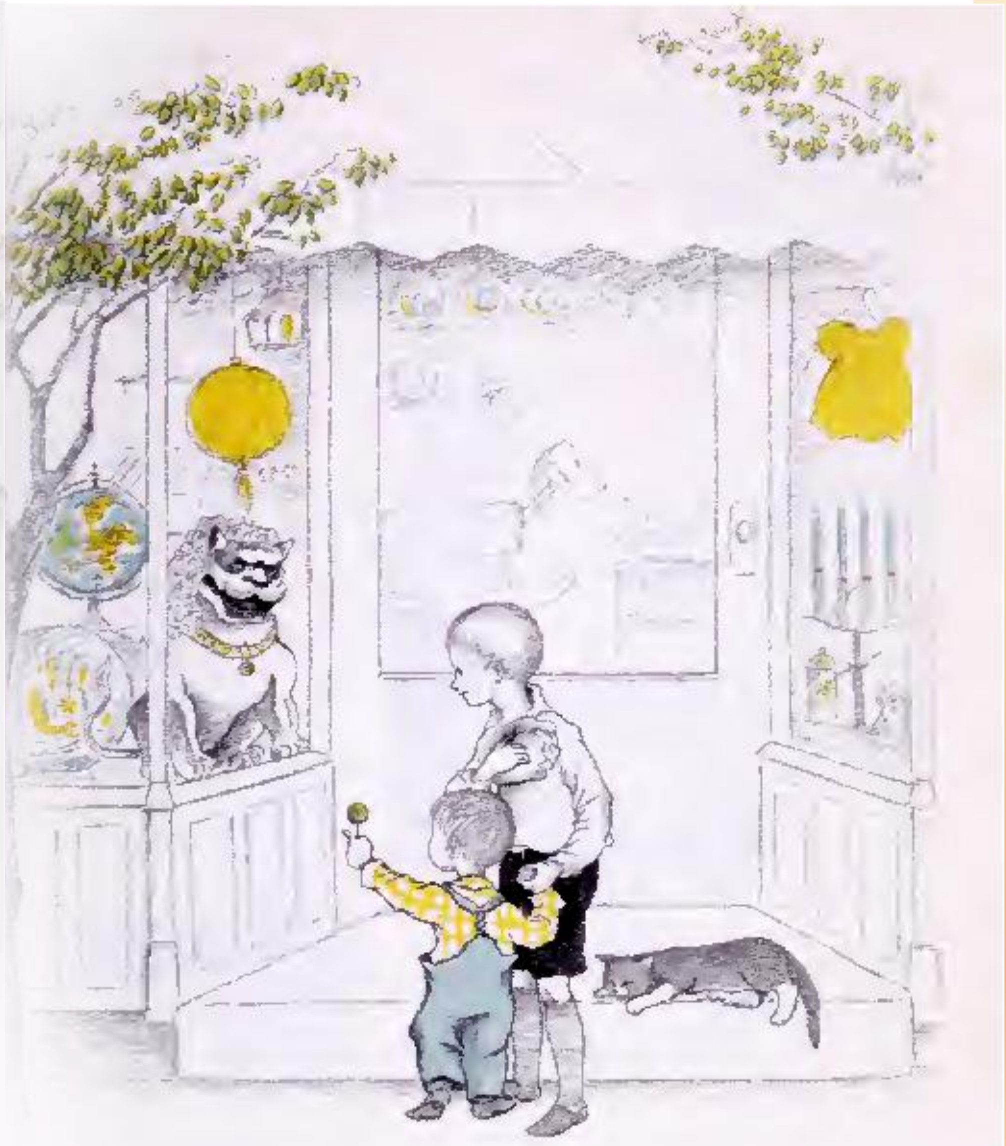
‘‘बेशक पढ़ सकता हूँ,’’ डेवी ने कहा।

‘‘क्या?’’ पीटर ने जानना चाहा।

‘‘घास से दूर!’’ डेवी ने पढ़ कर सुनाया।

‘‘नहीं, इस पर लिखा हे तोहफ़ों की दुकान,’’ पीटर ने बताया।

‘‘हो सकता है वहाँ कोई तोहफ़ा मिले।’’



‘‘क्या वह भी एक तोहफ़ा है?’’ डेवी ने पूछा।

‘‘बेशक,’’ पीटर ने जवाब दिया।



“तुम अन्दर जाओ,” डेवी ने कहा।

“मैं यहीं बाहर रुकता हूँ!”



“ठीक है,” पीटर ने कहा।

“पर यहीं सीढ़ियों पर बैठे रहना।”

“हाँ, मैं यहीं बैठा रहूँगा,” डेवी ने कहा।



‘‘फिरकियाँ और बलून!’’
आदमी ने गाते हुए कहा।



‘‘फिरकियाँ और बलून!’’



''वह फिरकी कितने की है?''
डेवी ने पूछा।
तुम दस सेंट में इसे ले सकते हो,''
आदमी ने कहा।



''पर मेरे पास तो सिर्फ़ एक डाइम
(दस सेंट का सिक्का) ही है,'' डेवी ने कहा।
''वह भी चलेगा,'' आदमी बोला।



"तुम्हें कोई तोहफ़ा मिला?"
डेवी ने पीटर से पूछा।

"नहीं," पीटर ने कहा।

"पर दुकान वाली महिला ने मुझे यह दिया।
मुझे लगता है कि यह फूलों के लिए है।"



"मैंने भी कुछ ख़रीदा है," डेवी ने बताया।



“डेवी!”पीटर बोला।

“क्या तुमने अपना डाइम खर्च कर दिया?”

“नहीं मैं उसे खा गया!” डेवी ने कहा।

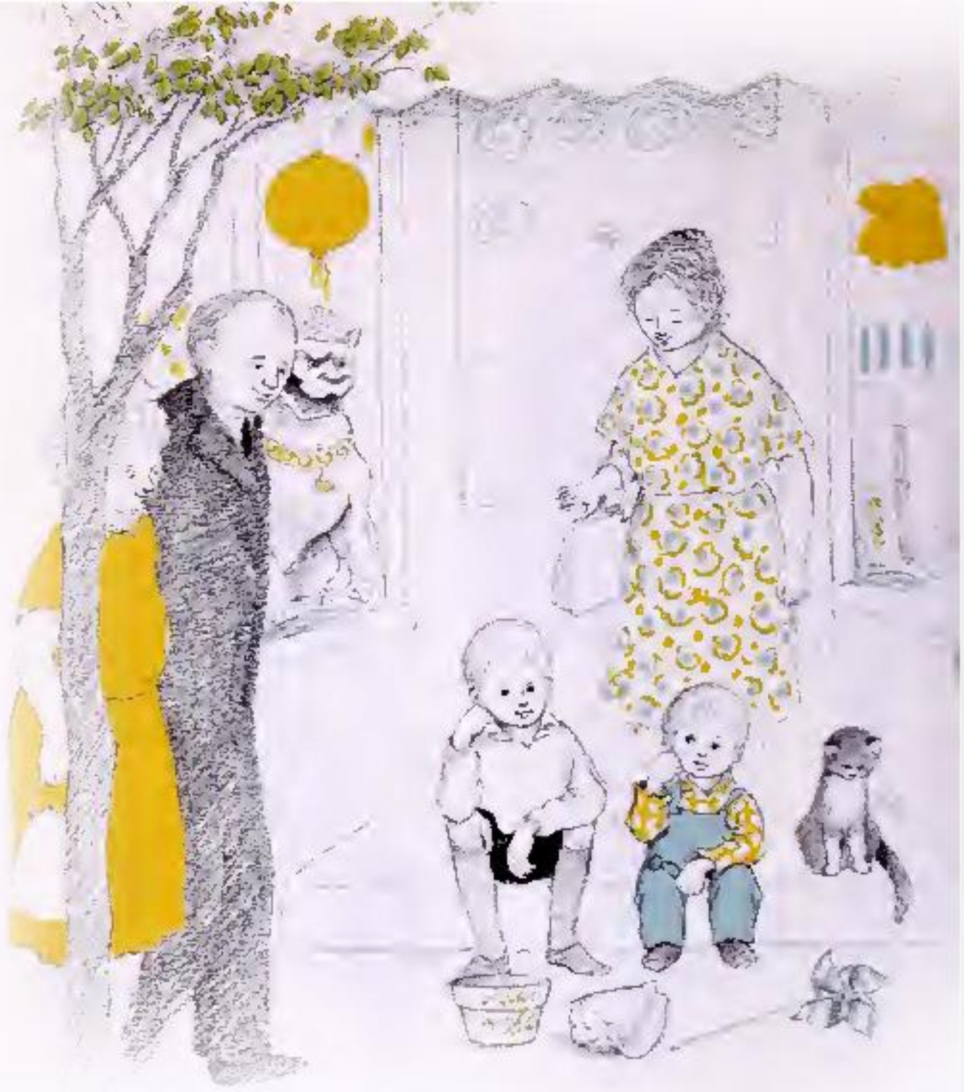


“क्या तुम सचमें उसे खा गए?”

पीटर ने पूछा।

“नहीं,” डेवी बोला।

“मैंने उससे यह फिरकी ख़रीद ली।”



''ओहो!'' पीटर ने कहा।

''अब माँ के लिए कोई तोहफ़ा नहीं है।

और न हमारे पास पैसे बचे हैं।''



''माफ़ करो पीटर,'' डेवी ने कहा।

''कोई बात नहीं,'' पीटर ने कहा।





“अरे डेवी!” पीटर बोला।
“मुझे एक बात सूझी है।
मैं घर के रास्ते पर
उसके बारे में बताऊंगा।”

“हम माँ को मेरा लॉलीपॉप दे सकते हैं,”
डेवी ने कहा।
“यह अब भी लगभग उतना ही बड़ा है
जितना बड़ा वह तब था जब मुझे मिला था।”





“अरे लड़कों! कितनी देर हो चुकी है!”
उनकी माँ ने कहा।
“इतनी देर तक तुम दोनों भला कहाँ थे?”

"हम तुम्हारे लिए तोहफ़ा लाने गए थे,”
पीटर ने बताया।



“कई सारे तोहफ़े!” डेवी ने जोड़ा।

“तुम्हारी सालगिरह के लिए।”



“ओहो!” माँ ने कहा।

“मैं तो भूल ही गई थी कि

आज मेरा जन्मदिन है!”

“मैंने कहा था ना कि माँ को बता दो?”

डेवी बोला।



''चलो और अपना तोहफ़ा देखा,''
पीटर ने कहा।
''हाँ,'' डेवी बोला। ''चलो और देखो।''



''कितना बढ़िया है!'' उनकी माँ ने कहा।
"बहुत-बहुत शुक्रिया!''

''इसे हमने बनाया है!''

''सारी चीज़ों को देखो!

हम कस्बे की हरेक दुकान में गए,''

पीटर ने बताया।

''दवा की दुकान में, टोपियों की दुकान में,

घड़ियों और कान के बुन्दों की दुकान में,

पालतू जानवरों की और तोहफ़ों की दुकान में।''

''अच्छा,'' उनकी माँ ने कहा।

''पर रगड़ने वाले ब्रशों की दुकान में नहीं,''

डेवी ने कहा।







“क्या तुम्हें तोहफ़ा सचमें अच्छा लगा?”

पीटर ने पूछा।

“बहुत ही सुन्दर है,” उनकी माँ ने कहा।

“मुझे अब तक जितने भी तोहफ़े मिले हैं,

उन सबसे ज़्यादा सुन्दर।”



“यह क्रिसमस-ट्री है,” डेवी बोला।

“नहीं डेवी,” पीटर ने कहा।

“मैंने तुम्हें बताया था ना।

यह क्रिसमस-ट्री नहीं है।”



"फिर कौन-सा है?" डेवी ने पूछा।

"अगर क्रिसमस-ट्री नहीं तो कौन-सा है?"



"मुझे लगता है," उनकी माँ बोली,

"कि मैं इसे . . .

'मुबारक सालगिरह का पेड़' कहूंगी!"

